ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 209-214
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

समावेशी विकास एवं गाँधी

डॉ0 सरोज कुमारी

एसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, एस.एन.डी.बी. राजकीय पी.जी. कॉलेज, नोहर (राजस्थान) भारत

Received-08.08.2022, Revised-13.08.2022, Accepted-16.08.2022 E-mail: sarojnyol73@gmail.com

सारांश: – किसी भी देश का समन्वित विकास तभी हो सकता है जब समाज के सभी वर्गों को उसमें सम्मिलित किया जाये तथा देश के राजनीतिक, प्रशासनिक स्तर पर दृढ़ इच्छा–शक्ति से कार्य किया जाये। अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य एवं स्थानीय सभी स्तरों पर अनुकूल नीतियाँ बनें एवं प्रशासनिक स्तर पर उन नीतियों का सही क्रियान्वयन हो। हमारे महाग्रंथों में भी समावेशी विकास की बात की गई है जिसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा 'वासुदेव कुटुम्बकं' में सभी वर्गों, जातियों, धर्मों, संस्थाओं को समान रूप से सम्मिलित किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– समन्वित विकास, राजनीतिक, प्रशासनिक स्तर, अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य एवं स्थानीय स्तर, समावेशी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणी पश्यन्ति
माँ कश्चिद दुख भाग भवेतः

(वैदिक साहित्य)

वैदिक साहित्य का यह श्लोक समाज में सह–अस्तित्व के सामंजस्यपूर्ण आदर्श को दर्शाता है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अनुसार समावेशी विकास मानव विकास के दृष्टिकोण का अनुसरण और मानव अधिकारों के मानकों और सिद्धान्तों को एकीकृत करते हुए, भागीदार, गैर भेदभाव और जवाबदेही बनाता है। समावेशी विकास की प्रक्रिया अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों पर आधारित और मानव अधिकार के प्रचार और संरक्षण पर मजबूती से ध्यान केन्द्रित करने के रूप में मानव विकास के लिए एक ढाँचे के संदर्भ में विकास के लिए एक अधिकार आधारित दृष्टिकोण है। इसी संदर्भ में देश के पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने अपने 4 जून, 2013 के भाषण में कहा कि सामाजिक शांति व सुरक्षा समावेशी विकास का लक्ष्य हासिल करने के लिए आवश्यक है।[1]

समावेशी विकास–समावेशी विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning & Definition of Inclusive Development)–रार्बसन के अनुसार, 'समावेश' शब्द प्रायः विविधता के शब्द के साथ युग्मित है और ये शब्द प्रायः परस्पर विनिमय करने के लिए उपयोग किये जाते हैं। हालांकि वे स्पष्ट रूप से अलग है। समावेश की संस्थायें, गैर लाभकारी संगठन सामूहिक रूप से समावेश को विविधता से अलग परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। यह बुनियादी मूल्यों की दृढ़ता एवं सामान्य सिद्धान्तों के रूप में विकसित हो चुका है। समावेश पर विचार करना मानव चेतना, जागरूकता और बातचीत में परिवर्तन की मिसाल है।[2]

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, समावेशी शब्द का मुख्य अर्थ है ''समाज का कोई भी वर्ग छोड़कर नहीं।''[3] समावेशी विकास का अर्थ क्या है? इस प्रश्न का पता लगाने में दो मुद्दे दृष्टिगोचर होते हैं[4]कृपहला, विकास एवं वृद्धि में अन्तर, एवं दूसरा, 'समावेशी' शब्द का तात्पर्य।

'विकास' (Development) साधारण आय से परे, अच्छी तरह से रहने के क्रियाशील आयाम में आता है। जबकि 'समावेश' (Inclusion) समाज में अच्छी तरह रहने की व्याप्ति पर ध्यान केन्द्रित करता है। और भी पेचिदगियाँ दृष्टिगोचर हुई है क्योंकि इन दोनों सवालों के जवाब वास्तव में परस्पर सम्बन्धित है। सिद्धान्त में वृद्धि एवं विकास में अन्तर सामान्य तौर पर स्पष्ट होना चाहिए। संक्षिप्त स्तर पर वृद्धि, आर्थिक वृद्धि के संदर्भ में होती है, दूसरे शब्दों में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि। यह एक संकीर्ण परिभाषित तकनीकी अवधारणा है, जो कि औसत दर्जे की है और दुनिया भर में यह सांख्यिकी एजेंसियों द्वारा वास्तव में मापा हुआ है। समावेशी विकास गरीबों के वास्ते हैं, जो औसत आय से भी कम पर जीवन यापन कर रहे हैं। समावेशी विकास तब होता है जब औसत उपलब्धियों में सुधार होता है और इन उपलब्धियों में से असमानतायें कम होती है। समावेशी विकास, विकास की ऐसी संकल्पना है जिसमें सभी वर्गों की सहभागिता होती है। समावेशी विकास हाशिए पर पड़े हुए सभी बहिष्कृत समूहों के विकास की प्रक्रिया को सुनिश्चित करता है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के अनुसार, ''बहुत से लोगों को उनके लिंग, धर्म, जाति, विकलांगता या गरीबी के आधार पर विकास से बाहर रखा गया है। इस तरह के बहिष्कार का प्रभाव दुनिया भर में इन वर्गों के साथ असमानता के स्तर को बढ़ाता है। सभी समूहों का अवसरों के सृजन में योगदान

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

तब तक नहीं हो सकता जब तक विकास को प्रभावी ढंग से लागू न किया जाये व विकास के लाभ का हिस्सा और धरातल की संस्थाओं में निर्णय लेने में उनको शामिल न किया जाये।"[5]

समावेशी विकास का लक्ष्य मतभेदों को समायोजित करने और मूल्य विविधता को समाप्त करने के लिए एक समावेशी समाज को प्राप्त करना है।

भारत की विकास रणनीति का उद्देश्य आत्म–निर्भरता, सामाजिक न्याय और गरीबी उन्मूलन के साथ आर्थिक विकास के माध्यम से समाज की एक समाजवादी पद्धति स्थापित करना यह संकेत सिद्ध करता है कि समावेशी विकास दृष्टिकोण का आजादी के बाद से अनुसरण किया गया है। हालाँकि गरीबी में कमी, असमानता को कम करने की तुलना में मुख्य चिंता का विषय था।[6] सामाजिक दलित वर्ग जैसे कि अनुसूचित जाति (SCs) और अनुसूचित जनजाति (STS) के लिए आरक्षण के रूप में सकारात्मक कार्यवाई पर कानूनी उद्देश्य को शामिल करने के लिए भारत भी पहले देशों के बीच था। समावेशी विकास गाँधीजी द्वारा सर्वोदय के रूप में परिष्कृत और अभ्यस्त किया गया। रचनात्मक कार्यक्रम, ग्यारह प्रतिज्ञा, ट्रस्टीशिप और गाँव स्वराज समावेशी विकास की नींव थे।7 जो क्रमशः ब्रिटिश भेदभावपूर्ण औपनिवेशिक शासन से अफ्रीका और भारत में रंगभेद से मुक्ति के संघर्ष के दौरान फोनिक्स, टॉलस्टाय फार्म और सत्याग्रह आश्रम में प्रयोगों के माध्यम से उभरा।

विकास का गाँधीवादी प्रारूप (Gandhian Model of Development) – गाँधीजी सत्य और अंहिसा के साथ–साथ अस्तेय, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, सर्व धर्म समभाव, अस्पृश्यता आदि शब्दों को सामाजिक व्रत मानकर एक सुखी, समृद्ध और विकसित समाज की परिकल्पना करते हैं। गाँधीजी ने भगवान को दुनिया के समस्त आज तक के प्रचलित धर्मों से भिन्न रूप में देखा है। गाँधीजी के भगवान 'दरिद्रनारायण' है। इन दरिद्रनारायण की उपासना में वे दरिद्र–भूखे व्यक्ति की रोटी में भगवान का दर्शन पाते हैं। ये दरिद्रनारायण दुनिया के किसी धर्म, किसी भाषा के कोष में नहीं मिलते। ये केवल गाँधी के भगवान है। गाँधीजी इस वर्तमान विज्ञान के युग में भौतिकता की पराकाष्ठा में आध्यात्मिकता और मानवता के द्वारा एक प्रबल प्रकाश देते हैं, जिससे अनेक द्वंद्वों, अंधकारों, विकारों में लिप्त मानव सच्चा मार्गदर्शन पाता है, क्योंकि "भूखों मरता व्यक्ति अन्य सभी बातों से पहले अपनी भूख मिटाने का प्रयास करता है।"

गाँधीजी8 (1931) लिखते हैं, मेरे सपनों के स्वराज्य में जाति या धर्म का कोई स्थान नहीं हो सकता। उस पर शिक्षितों और धनवानों का आधिपत्य नहीं होगा। वह स्वराज्य सबके लिए, सबके कल्याण के लिए होगा। सबकी गिनती में किसान तो आते ही हैं, किंतु लूले–लंगड़े, अंधे और भूख से मरने वाले लाखों–करोड़ों मेहनतकश मजदूर भी अवश्य आते हैं। आगे उन्होंने लिखा है कि मेरे सपनों का स्वराज्य तो गरीबों का स्वराज्य होगा। जीवन की सामान्य सुविधाएँ गरीबों को अवश्य मिलनी चाहिए, जिनका उपयोग अमीर आदमी करता है।

गाँधीजी समाज में आर्थिक समानता के पक्षधर – आर्थिक समानता से इनका तात्पर्य "जगत् में सबके पास समान सम्पत्ति" का होना है। यदि समाज का प्रत्येक सदस्य अपनी शक्तियों का उपयोग वैयक्तिक स्वार्थ के लिए न करके सामूहिक कल्याण के लिए करे तो समाज में सुख–समृद्धि के साथ–साथ सामाजिक समानता में वृद्धि होगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि जहाँ डार्विन 'प्रकृति प्रवरण के सिद्धान्त' में शक्तिशाली जीव द्वारा बलहीन जीव को मार डालना अथवा बलहीन जीव द्वारा प्रकृति के साथ अनुकूलन न करना और प्रकृति द्वारा मार डालना विकासवाद के लिए उत्तरदायी मानता है तो मार्क्स शोषक और शोषित के बीच 'हिंसात्मक क्रांति' को सामाजिक समरसता के लिए आवश्यक मानता है, वहीं गाँधीजी "दूसरों के लिए जीयो और दूसरों को जिलाने" के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं।

गाँधीजी अपने सपनों के स्वराज्य के संदर्भ में यंग इंडिया में लिखते हैं कि "स्वराज्य राजा, किसान, धनवान, जमींदार, भूमिहीन खेतिहर, हिन्दुओं, पारसियों और ईसाइयों सभी के लिए होगा। उसमें जाति–धर्म के भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं होगा।" इनका विचार था कि स्वराज्य के उपरान्त जो नया मानव समाज निर्मित होगा, वह समरस समाज होगा। इस नवनिर्मित समाज में जातिभेद, वर्ग भेद, धर्म भेद, का कोई स्थान नहीं होगा। उनका धर्म समभाव है, जिसमें सभी धर्मों का समावेश होता है और मानव धर्म के रूप में उभरकर सामने आता है।

महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन मनुष्य जाति के लिए प्रेरणा का एक प्रमुख स्रोत है। आज जबकि मानवता युद्ध, आतंक, घृणा और हिंसा से त्रासित है, महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन उसे सुरक्षा, शांति और प्रेम का मार्ग दिखाता है। आज के भारतीय परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी के जीवन और चिंतन की उपादेयता और 'ज्यादा बढ़ गई है। वे जन–जन के प्रिय थे, देश की आजादी में उनका महान् योगदान था तथा नए भारत की सुंदर व्यवस्था के लिए उन्होंने मार्गदर्शन दिया, इसी कारण श्रद्धा से लोग उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुत ही अनूठा था। वे एक धार्मिक संत थे परंतु संतों की तरह केवल आत्म–कल्याण या मोक्ष का मार्ग उन्होंने नहीं चुना, बल्कि भारतमाता की एवं दरिद्र–नारायण की सेवा को ही उन्होंने अपना

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

धर्म बनाया। उन्होंने युद्ध हिंसा एवं घृणा से भरी दुनिया को सत्य, प्रेम और अहिंसा का उपदेश दिया। समस्याओं के शांतिपूर्ण हल के लिए गाँधीजी ने सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा एवं बहिष्कार जैसे नैतिक अस्त्र मानव जाति को प्रदान किए। गाँधीजी केवल भारत के ही नहीं, विश्व की महान् विभूति थे। गाँधीजी का जीवन प्रेरणादायी है और उनकी शिक्षाएँ जीवन को बहुत ही उन्नतिशील, स्वस्थ और आनंददायक बनाने में सहायक हैं।

गाँधीजी के मन में इस बात ने यह जड़ जमा ली कि "यह संसार नीति पर टिका हुआ है, नीति मात्र का समावेश सत्य में है। सत्य को तो खोजना ही होगा।" इस तरह दिन–पर–दिन सत्य की महिमा उनके लिए बढ़ती गई।
नीति का एक छप्पय उनके दिल में बस गया। उसके उन्होंने अनगिनत प्रयोग किए। वह चमत्कारी छप्पय यों हैं[9] –

पाणी आपने पाय, भलु भोजन तो दीजै,
आवी नमावे शीश, दंडवत कोड़े कीजे।
आपणा धामे दाम, काम मोहसेंनु करिये,
आप उगारे प्राण, ते तणा दुःख में मरिए।
गुड़ केड़े तो गुन दश गणों, मन वाचा कर्मे करी,
अवगुण केड़े जे गुण करे, ते जग में जीत्यो सही।

अर्थात् – जो हमें पानी पिलाए, उसे हम अच्छा भोजन कराएँ; जो आकर हमारे सामने सिर नवाए, उसे हम उमंग से दंडवत् प्रणाम करें; जो हमारे लिए एक पैसा खर्च करे, उसका हम मोहरों की कीमत का काम कर दें; जो हमारे प्राण बचावे, उसका दुःख दूर करने के लिए हम अपने प्राण तक न्यौंछावर कर दें; जो हमारा उपकार करे, उसका तो हमें मन वचन और कर्म से दस गुना उपकार करना ही चाहिए; लेकिन जग में सच्चा और सार्थक जीना उसी का है जो अपकार करने वाले के प्रति भी उपकार करता है। इस नीति के छप्पय को मोहनदास ने सभी धर्मों से ऊपर का कार्य मानकर अपने लिए जीवन का मंत्र बना लिया तथा आजीवन इसी सिद्धांत पर चलते रहें।

मोहनदास करमचंद गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका में दरिद्रनारायण की सेवा का व्रत लिया। उन्होंने सेवा धर्म को अपनाया। इस संबंध में उन्होंने अपनी आत्म–कथा में लिखा है[10] – "मैंने सेवा धर्म अपना लिया था, क्योंकि मेरी समझ में ईश्वर से साक्षात्कार का यही एक उपाय था। मेरी दृष्टि में लोक सेवा भारतमाता की सेवा थी। इसका अवसर मेरे जीवन में अनायास उपस्थित हो गया, शायद इसलिए कि मेरा स्वाभाविक विकास इसी दिशा में संभव था। दक्षिण अफ्रीका आने से मेरी इच्छा देशाटन करने, काठियावाड़ के वैमनस्यपूर्ण वातावरण से बचने और जीविकोंपार्जन के उद्देश्य से ही पैदा हुई थी। लेकिन यहाँ आकर, भगवद् दर्शन और साक्षात्कार की लगन थी।"

सेवा धर्म के संबंध में उनकी मान्यता थी कि दिखावे या लोकलाज से धर्म को अपनाने से साधक की प्रगति रुक जाती है और उनका मन मर जाता है। सेवा में आनंद का अनुभव न हुआ, तो सेवक और सेव्य में से किसी का कुछ भला नहीं होता। लेकिन मन से सेवा की जाए तो सेवक को ऐसा आनंद आता है कि अन्य सब प्रकार की संपदा और सुख भोग फीके पड़ जाते हैं।

स्वयं को सेवा के लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के लिए गाँधी सेवक को स्वयं चरित्रवान, स्वस्थ एवं पवित्र जीवन बिताने की सलाह देते थे।

बम्बई में महामारी[11] – सन् 1896 के दिनों में बम्बई में पहली बार महामारी (प्लेग) का प्रकोप हुआ। पूरे पश्चिम भारत में इसका आतंक छा गया। राजकोट में भी खलबली मच गई। एक सार्वजनिक समिति बनाई गई। गाँधीजी सेवाकार्य में जुट गए। गाँधीजी ने पाखानों की सफाई पर जोर दिया और समिति ने गली–गली में जाकर पाखानों की जाँच करने का निश्चय किया। राजकोट नगर की आरोग्य रक्षा के लिए गाँधीजी ने घर व बाहर की सफाई का कार्यक्रम रखा अनेक स्वयंसेवी युवा लोग उनके साथ हो लिए। मालदार व ऊँची जाति के लोगों की अपेक्षा गाँधीजी को गरीब व निम्न जाति के लोगों का इस कार्य में ज्यादा सहयोग मिला। अचरज की बात यह भी दिखाई दी कि बड़े घरों की अपेक्षा छोटे व गरीब लोगों के झोंपड़ों में ज्यादा सफाई थी।

इस समय गाँधीजी राजकोट की हरिजन बस्ती में गए, जहाँ कोई अन्य गणमान्य व्यक्ति नहीं गया। उन तथाकथित कुलीन लोगों के दिलों में जाति–पाँति की बू थी। भला हरिजनों की बस्ती में कैसे जाते? गाँधीजी को वहाँ जाकर सुखद आश्चर्य हुआ कि हरिजन बस्ती के लोगों ने स्वयं अपनी बस्ती को पहले से भी अधिक स्वच्छ बना रखा था।

क्वारंटाइन (सूतक) – बम्बई से गाँधीजी की दूसरी दक्षिण अफ्रीका यात्रा पुनः आरंभ हुई। दक्षिण अफ्रीका के बंदरगाहों में यात्रियों के आरोग्य की पूरी जाँच की जाती है। अगर रास्ते में किसी को कोई संक्रामक रोग हुआ हो तो स्टीमर

को सूतक (क्वारंटाइन) में रखते हैं।[12] डरबन पहुँचते ही दोनों जहाजों को सलाह दी गई कि वे वापस भारत चले जाएँ या डाक्टरी जाँच कराएँ व इंतजार करे। यह कहा गया कि बम्बई में प्लेग फैली हुई है इसलिए वहाँ से आने वाले जहाजों को बंदरगाहों में नहीं घुसने दिया जाएगा। जहाजों ने वापस जाने की बजाय क्वारंटाइन में रहना ज्यादा पसंद किया। डॉक्टर ने जाँच–पड़ताल करके स्टीमर (जहाजों) के लिए पाँच दिन का क्वारंटाइन (सूतक) निश्चित किया। किंतु इस सूतक के आदेश का हेतु (उद्देश्य) केवल आरोग्य न था डरबन के गोरे नागरिक उनको वापस भगा देने का आंदोलन कर रहे थे। अतएव उनका यह आंदोलन भी उक्त आदेश का एक कारण था। गोरों की, गाँधीजी से नाराजगी का कारण यह था कि गाँधी पर वे दो अभियोग लगा रहे थे, प्रथम तो यह कि गाँधी ने भारत में नेटालवासी गोरों की अनुचित निंदा की तथा दूसरा यह कि गाँधी नेटाल को हिंदुस्तानियों से भर देना चाहते थे। लेकिन गाँधीजी निर्दोष थे। आखिर 23वें दिन अर्थात् 13 जनवरी, 1897 को जहाज के यात्रियों को मुक्ति मिली। उतरने की आज्ञा दी गई।[13]

सेवा भावना व साफ–सफाई आंदोलन[14] – दक्षिण अफ्रीका में अल्पकाल में ही गाँधीजी को उनके अनूठे व्यक्तित्व, सत्यनिष्ठा व सेवा भावना के कारण काफी ख्याति मिली। एक बार द्वार पर एक कोढ़ी के आ जाने पर गाँधीजी ने उसके घावों को स्वयं धोया। उसे भोजन दिया। सरकारी अस्पताल में उसे भर्ती कराकर उपचार का प्रबंध किया। उपचार व सेवा शुश्रुषा में उन्हें आनंद आता था। इसी कारण पारसी रूस्तम जी के बनवाए अस्पताल में लोक सेवी डॉक्टर बूथ के सहायक के रूप में सेवा कार्य आरंभ किया।

1906 में लोकसेवा का संपूर्ण व्रत लेने के लिए गाँधीजी ने ब्रह्मचर्य के पालन का व्रत लिया और आजीवन उसे निभाया। गाँधीजी अपने कर्मचारियों या मित्रों के साथ जाति या धर्म के आधार पर कभी भेदभाव नहीं बरतते थे।
गाँधीजी प्रवासी भारतीयों के रहन–सहन व जीवन स्तर में सुधार चाहते थे। वे भारतीयों में आपसी सहयोग पैदा करना चाहते थे। उन्हें अपने कर्तव्यों का भली प्रकार से पालन करके ही अधिकार पाने के लिए सक्षम बनना होगा, ऐसी गाँधीजी की मान्यता थी। शरीर व घर की साफ–सफाई व रहन–सहन के सुधार पर भी जोर दिया गया। उन्हीं दिनों नाटाल बंदरगाह में प्लेग फैलने की आशंका को देखते हुए सफाई अभियान आरंभ हुआ। बैरिस्टर गाँधी के नेतृत्व में प्रवासी भारतीयों ने सफाई अभियान आरंभ किया। इसके साथ ही गाँधीजी प्रवासी भारतीयों को अपनी मातृभूमि भारत के प्रति भी उनके कर्तव्यों का बोध कराते थे। इस तरह गाँधीजी ने लोक सेवा के माध्यम से प्रवासी भारतीयों में जन–चेतना पैदा की।

कुली लोकेशन, महामारी – गाँधीजी तीसरी बार दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। ट्रांसवाल की सुप्रीम कोर्ट में गाँधीजी ने बैरिस्टर की हैसियत से अपना नाम दर्ज कराया। बैरिस्टर गाँधी जोहान्सबर्ग में कार्यालय सजाकर व घर बसाकर रहने लगे। प्रेक्टिस जम गई। लोकसेवा का कार्य भी बढने लगा। जोहान्सबर्ग में भारतीय प्रवासियों की बस्ती में प्लेग की बीमारी फैल गई। इस बस्ती को 'कुली लोकेशन' कहा जाता था। आरोग्य की दृष्टि से लोकेशन की स्थिति खराब थी। बस्ती उठाई जाने वाली थी। गाँधीजी को इस महामारी के फैलने की सूचना मिली तो म्युनिसिपल अधिकारियों को उन्होंने अपनी सेवाएँ समर्पित की। एक खाली मकान का ताला तोड़कर उसमें 23 रोगियों का उपचार आरंभ किया। डॉक्टर गोड फ्रे भी सूचना मिलते ही वहाँ पहुँचे। गाँधीजी व उनके दफ्तर के कर्मचारी सेवा में जुट गए। अपनी जान की परवाह नहीं की। अगले दिन रोगियों के लिए म्युनिसिपैलिटी ने एक खाली गोदाम की व्यवस्था कर वहाँ ले जाने की सूचना दी। गाँधीजी व सेवकों ने खुद को उसे साफ किया और वहाँ तत्काल काम देनेवाला एक अस्पताल खड़ा कर दिया।

बड़े उपचार के बाद केवल 23 में से दो रोगियों को ही बचाया जा सका। नर्स जो सेवा के लिए आई थी, वह भी रोगियों का इलाज करते–करते महामारी की चपेट में आ गई व मृत्यु का शिकार हो गई। अन्य कार्यकर्ता सकुशल बच गए।

महामारी के दिनों में सेवा–सुश्रुषा में व्यस्त गाँधीजी कई दिनों तक शाकाहारी भोजनालय में दिखाई नहीं दिए।

गाँधीजी के शब्दों में – "एक लंबे समय से मेरा अपना यह नियम था कि जब आसपास महामारी की हवा हो, तब पेट जितना हलका रहे उतना ही अच्छा। इसलिए मैंने शाम का खाना बंद कर दिया था और दोपहर को ऐसे समय पहुँचकर खा आता था, जब कि दूसरे कोई पहुँचे न होते थे। चूँकि मैं महामारी के बीमारों की सेवा में लगा था, इसलिए दूसरों के संपर्क में कम से कम आना चाहता था।"

शाकाहारी भोजनालय में दिखाई नहीं दिए, तो उनके सैर के साथी अलबर्ट बैस्ट चिंतित हुए। वह उनके दफ्तर गए। वहाँ किसी से भेंट नहीं हुई तो घर आए। बैस्ट ने गाँधीजी से स्वयं को लोकसेवा में लगाने का आग्रह किया। बैस्ट प्रेस चलाते थे। गाँधीजी ने उन्हें 'इंडियन ओपीनियन' का काम संभालने के लिए डरबन भेज दिया। डरबन से रिपोर्ट प्राप्त हुई कि प्रेस बहुत अव्यवस्थित है। समाचार जानकर गाँधीजी डरबन रवाना हुए।
रेल्वे स्टेशन पर पोलक ने उन्हें वक्त काटने के लिए एक पुस्तक रस्किन की लिखी–'अन्टू द लास्ट' पढ़ने को दी। गाँधीजी

सफर में रात भर पुस्तक पढ़ते रहे। सवेरे डरबन पहुँचे। इस पुस्तक ने गाँधी के मन पर ऐसा प्रभाव डाला कि उन्हें रात भर नींद नहीं आई। इस पुस्तक ने गाँधीजी के जीवन में कुछ तात्कालिक प्रयोग करने की प्रेरणा दी। गाँधीजी ने बाद में इस पुस्तक का अनुवाद 'सर्वोदय' पुस्तक के रूप में किया।

सर्वोदय के सिद्धांतों को गाँधीजी ने निम्नलिखित प्रकार से प्रतिपादित किया[15] –

(1) सब की भलाई में अपनी भलाई है।

(2) वकील और नाई के काम की कीमत एक–सी होनी चाहिए, क्योंकि जीविका का अधिकार सब के लिए समान है।

(3) सादा, मजदूरी का और विज्ञान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

गाँधीजी ने आगे लिखा है कि – "सर्वोदय ने मुझे दिये की तरह दिखा दिया कि पहले सिद्धांत में ही बाकी के दो सिद्धांत समाए हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह में विजय प्राप्त करके तथा प्रवासी भारतीयों के आत्मगौरव को जगाकर महात्मा गाँधीजी अपने प्यारे देश व देशवासियों की सेवा की साध लेकर 1915 में भारत वापिस आए।

गाँधीजी को देश की गुलामी के कारण जनता के खोये हुए आत्मगौरव, आर्थिक गरीबी व सामाजिक फूट से बहुत दुःख हुआ। वे भारत को एक स्वस्थ कौम की तरह जगा देना चाहते थे।

वे जातिवाद, छुआछूत, सांप्रदायिकता को हटाकर एक ऐसा स्वस्थ भारत चाहते थे कि सभी भारतवासी स्वेच्छा से अपने कर्तव्यों का पालन करें व अन्याय, शोषण व अत्याचार के विरुद्ध अहिंसात्मक ढंग से आंदोलन करें। अपने कर्तव्यों की पूर्ति के लिए गाँधीजी को भारत में सत्याग्रह–आश्रम स्थापित करने की आवश्यकता महसूस हुई। 25 मई, 1915 के दिन अहमदाबाद के निकट कोचरब नामक स्थान पर पहले सत्याग्रह–आश्रम की गाँधीजी ने स्थापना की जो कोचरब आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गाँधीजी का आश्रम सभी के लिए खुला था। धर्म, संप्रदाय, जाति और वर्ग के आधार पर भेदभाव के बिना, मानवता की सेवा करने के लिए सत्याग्रह का व्रत लेने वाला कोई भी व्यक्ति आश्रम में प्रवेश पा सकता था। छुआछूत की संकीर्ण भावना से तो गाँधीजी का हृदय बचपन से ही मुक्त था। सत्य का साक्षात्कार कर लेने वाले हृदय में तो छुआछूत का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

महात्मा गाँधी आधुनिक भारत के जनक थे। उन्होंने अंग्रेजों की दासता से भारत को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा आजाद भारत को नव–निर्माण के लिए एक नई दिशा दी, इसी कारण हम उन्हें राष्ट्रपिता या बापू कहते हैं। मूलतया महात्मा गाँधीजी एक आध्यात्मिक संत थे और उनकी आध्यात्मिक एवं सत्य की शक्ति ने ही उन्हें राजनीति में लाकर देश की सेवा के लिए प्रेरित किया।

उनकी आस्था मनुष्य की आत्म–शक्ति के परम विकास में थी। अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए उन्होंने सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा व बहिष्कार जैसे अमोघ शस्त्र मानव जाति को दिए जिसके लिए संपूर्ण मानव जाति उनकी ऋणी है। महात्मा गाँधी के अनूठे चरित्र से प्रभावित होकर विश्व विख्यात वैज्ञानिक आईंसटीन ने कहा था –

"आने वाली पीढ़ियाँ शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेंगी कि गाँधी जैसा हाड़–माँस का पुतला कभी इस धरती पर हुआ होगा। गाँधी इंसानों में एक चमत्कार थे।"

इस तरह से हम पाते हैं कि गाँधीजी का दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था। जीवन के विकास व मानवता के कल्याण के हर विचार को उन्होंने जहाँ से भी मिला, सहजता से स्वीकार किया और सर्वोत्तम जीवन दर्शन को अभिव्यक्त किया।

गाँधीजी का जीवन एक महासागर के समान है, जिन पर जो भी लिखा जाए वो एक बूँद के समान है। लेखक ने आज की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए गाँधीजी के मात्र उन उद्धरणों का वर्णन किया है जो आज की परिस्थिति के लिए अत्यावश्यक है जिसकी हमें जरूरत भी है ताकि लोग गाँधीजी के बारे में पढ़ें कि किस तरह उन्होंने क्वारंटाइन, महामारी, सेवा भावना व साफ–सफाई कार्यक्रमों में अपना योगदान दिया था। आज पूरा विश्व कोरोना महामारी से त्रस्त है। भारत देश भी कोरोना महामारी से पीड़ित है। ऐसी स्थिति में क्वारंटाइन का पालन, महामारी से बचाव व नारायण सेवा ही प्रथम कर्तव्य बना हुआ है। हम भारतवासियों को देश की सरकार द्वारा लगाए गए नियम–कायदों का मन से पालन करना चाहिए ताकि हम इस महामारी से मुक्त हो सकें।

जीवन के विकास व मानवता के कल्याण के लिए गाँधी के विचारों का पालन करके ही हम आज की परिस्थितियों से उभर सकते हैं, क्योंकि यही समावेशी विकास है जिसमें सभी के जीवन की भलाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भोजन–पोषण आदि की समुचित व्यवस्था व विकास के आयामों को उद्गारित किया जाता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.business-standard.com/article/news-ani/social-security-are-essential...6/11/2013.
2. https://en.wikipedia.org/wiki/inclusive development.
3. गाँधी, पी. जगदीश, 'इनक्लुसिव ग्रोथ इन ग्लोबलाइज्ड इंडिया' (चैलेन्जेस एंड ऑप्सन्स), दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स, पीवीटी, एलटीडी, नई दिल्ली, 2008, पृ. 149.
4. रॉनियर, गणेश एवं कनबूर, रवि, 'इनक्लुसिव डवलपमेंट : टू पेपर्स ऑन कॉन्सेप्टुलाइजेशन एप्लीकेशन, एंड दी एडीबी पर्सपेक्टिव', जनवरी, 2010, पृ. 5.
5. www.undp.org/content/undp/en/home/ourwork/povertyreduction/Focus-areas/Focus-inclusive-development.html.
6. देव, एस. महेंद्र, 'इनक्लुसिव ग्रोथ इन इंडिया', (एग्रीकल्चर, पावर्टी एंड ह्यूमन, डवलपमेंट), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2007, पृ. 9.
7. दिवाकर, डी.एम. एवं मिश्रा, जी.पी. (सं.) 'डिप्राइवेशन एंड इनक्लुसिव डवलपमेंट', माणक प्रकाशन प्रा. लि. के सहयोग से विकास अध्ययन गिरी संस्थान द्वारा प्रकाशित, 2006, पृ. 42.
8. बघेल, डॉ. डी.एस. एवं बघेल, डॉ. (श्रीमती) किरण, 'सामाजिक परिवर्तन एवं विकास', कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 2011, पृ. 197.
9. विक्रमजी, मथुरादास (संक्षेपकार), त्रिवेदी काशीनाथ (अनुवादक), 'गाँधीजी की संक्षिप्त आत्मकथा', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, मार्च 2000, पृ. 14.
10. विवेक, रामलाल, 'महात्मा गाँधी जीवन और दर्शन', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2004,पृ. 38.
11. उपरोक्त, पृ. 41.
12. उपर्युक्त, विक्रम जी, मथुरादास, पृ. 69.
13. उपर्युक्त, विवेक, रामलाल, पृ. 43.
14. उपरोक्त, पृ. 45, 47.
15. उपरोक्त, पृ. 53.

*****